



# धीरे बहे दोन रे...

रूस में बदलती संस्कृति का चित्रण का  
महान्, मानवीय उपयास

मिलाइल शोलोखोव  
अनुवादक गोपीकृष्ण 'गोपेश'

~~अप्रकाशित~~

द्वितीय खण्ड



राजकमल

राजकमल प्रकाशन

© १९६६ राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली ।

मूल्य आठ रुपये

प्रकाशक  
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड  
दिल्ली  
मुद्रक  
नवीन प्रस, हरियाणवा, दिल्ली ६

क्रम

भाग ४

६ स २२३

भाग ५

२२४ स ४५७

© १९६६ राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली ।

मूल्य आठ रुपये

प्रकाशक  
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड  
दिल्ली  
मुद्रक  
नवीन प्रस दरियागज दिल्ली ६

क्रम

भाग ४

६ स २२३

भाग ५

२२४ स ४५७



*Not by the plow is our glorious earth furrowed  
Our earth is furrowed by horses' hoofs  
And sown is our earth with the heads of Cossacks  
Fair is our quiet Don with young widows  
Our father the quiet Don blossoms with orphans  
And the waves of the quiet Don are filled  
with fathers and mothers tears*

*Oh thou our father the quiet Don !  
Oh why dost thou our quiet Don so sludgy flow ?  
How should I the quiet Don but sludgy flow !  
From my depths the cold springs beat  
Amid me the quiet Don the white fish leap*

Old Cossack Songs





## भाग ४

१

अक्तूबर १९१६) रात का समय। बर्फा और आधी। हरा भरा जंगल। आल्डर से ढकी दलदल के किनारे खाइयाँ। सामने कँटीले तार के जाले। खाइयो में ठंडी गीली कीचड़। प्रेक्षण चौकी का गीला टीन ज़रा ज़रा चमक रहा है और यहाँ वहाँ खाइया में रोशनियाँ दिवाई देती हैं।

अफगरा के एक खाई के द्वार पर एक मोटा सा अफसर थोड़ी देर के लिए रुका। उसकी गीली जंगलिया ओवरकाट के बटन पर फिसल रही थी। जल्दी से बटन खोलकर उसने कालर से पानी की बूँदें भाँड़ी। द्वार पर कीचड़ में असली पड़ी घास पर अपने बूट साफ करके द्वार खोला और झुककर अन्दर चला गया।

एक छाटे से पराफीन लम्प के प्रकाश की पीली सी धारी उसके चेहरे पर चमक उठी। खुली हुई जाकिट पहन एक अफसर लकड़ी के थड़े से उठा। अपने उलझे हुए सफ़द बाला पर हाथ फ़रत हुए उसने अँगड़ाई ली।

‘वर्षा हो रही है?’

‘हाँ’ आनवाल ने उत्तर दिया अपना कोट उतारा और भीगी हुई टोपी के साथ हाँ दरवाजे की कील पर लटकात हुए बोला, “तुम तो यहाँ मजे में हो। खूब गन्म कर रही है जगह।”

‘हमन यादी दर पहल यहाँ स्टोव जलाया था। भुसीबत यह है

कि घरती से पानी सीम रहा है। यह क्या तो हम यहा स निकाल-  
ही दम लेगी। इसका बुरा हो। तुम्हारा क्या खयाल है बचुक ?'

हाथ रगड़ता हुआ बचुक भुक्कर स्टोव क पास बठ गया।

'यहा नीचे कुछ लकड़ी के तहते डाल लो। अपनी खाई मे हम  
मजे से हैं। नये पैरा घूम सकते हैं। सब सूखा है। लिस्तनिस्  
कहाँ है ?

'सो रहा है। सतरी चौकिया का चक्कर लगाकर प्राया था। आ  
ही लट गया।

'उसे जगाना ठीक रहेगा क्या ?

क्यों नही ? शतरंज की एक बाजी लगाएंग।

बचुक न अपनी धनी भौहा पर उगली फेरकर पानी भटका अ  
फिर उगली पर नजर जमाकर घीरे स पुकारा, येवनी निकोलायेविथ।

क्या है ? लिस्तनिस्की कुहनी के सहारे उठते हुए बोला।

शतरंज खेलोगे ?

येवनी ने अपनी टांगें बिस्तर से नीचे डाल दी और नरम सप  
हपेलिया से अपनी छाती जोर जोर स रगड़ने लगा।

पहली बाजी समाप्त होने वाली थी कि पाक्षवी स्क्वाड्रन क  
अकसर कप्टन काल्मीकोव और लफ्टीनेंट बूबोव अदर दाखिल हुए।

'नई खबर।' दहलीज के अदर पाँव रखते ही काल्मीको  
चिल्लाया, 'शामद रेजिमंट को पीछे हटा लिया जाएगा।

कहा से मुना है ? सफेद वालो वाला अफसर जूनियर कप्ट  
मक्लोव अविश्वास स मुसकराया।

'तुम्ह विश्वास नहीं हाता, चचा प्यात्र ?

'सच तो यह है कि नही होता।

बटरी क कमाण्डर ने हम अभी अभी टेलीफोन पर बताया है  
तुम पूछोगे उसे कसे मानूम हुआ। तो सुनो, वह कल ही डिबिजन  
स्टाफ से आया है।

इस वकन तो नहान को जी चाहता है। मजा आ जाएगा।  
धूबोत्र वाला। उसकी आवाज म मसीम आनंद भरा हुआ था। उस

प्रपन कंधे ऐसे थपथपाए जैसे बच की टहनी से अपने आपको कोड़े मार रहा हो।

‘केवल एक टब चाहिए। पानी तो यहा बहुत है।’ मकूनाव मुसकराया।

“यहाँ बहुत नमी है, भई। बहुत ही गीली-गीली जगह है।” काल्मीकाव न लकड़ी की दीवारों और कीचड़ भरे फर्श पर निगाह दीढ़ात हुए शिकायत-सी बो।

‘हमारे पड़ोस में दलदल है।’

खुदा का शुक करो कि दलदल में भी तुम मौजूद तो हो। यहा ऐसे आराम से हो जसे हातिमताई के घर में।” बचुक न बात काटन हुए कहा, ‘और ज़िलो में तो हमले हो रह हैं। यहाँ हम हफ्ते में केवल एक बार गालाधारी करते हैं।’

“यहाँ कोने में पड़े सड़ने में तो हमला करना अच्छा है।’

‘कज्झाक इसलिए नहीं रवे ज्ञात कि हमला में मरवा लिए जाएँ। भासे क्यों बनते हो मकूलोव ?’

‘तो तुम्हारे म्याल में हम किसलिए हैं ?’

“समय आने पर सरकार अपनी पुरानी चाल चलेगी और हम कज्झाका की मदद से अपनी गद्दी की रक्षा करेगी।”

“अब आ गए तुम अपने दहरियापन पर।” काल्मीकोव ने अपना हाथ सहाराया।

‘दहरियापन ? क्या ?’

‘क्याकि यह है।’

‘गलत बात है काल्मीकोव। तुम सचाई से श्राव नहीं बंद कर सकते।’

‘कसी सचाई ?’

‘हरेक जानता है कि यह सच बात है। तुम भी क्या नहीं स्वीकार कर लते इसे ?’

“सावधान, सज्जना।” भूवाव चिल्लाया। नाटकीय ढंग से भुक्कर बचुक की ओर इंगारा करते हुए बोला, ‘अब कानेंट बचुक सोशल-

डेमोक्रेट स्वप्न-पुस्तिका पर भाष्य करेंगे।”

‘विदूषक बन रहे हो क्या?’ बचुक कटाक्षपूर्वक मुसकराया और अपनी कठार नज़रें जूबोव की आँखों पर गड़ा दी। खर तुम्हारी मरजी। हर आदमी अपना अपना काम करेगा। मैं तुमसे कह रहा हूँ कि हमने पिछले वष के मध्य में युद्ध नहीं देखा। लाइया का युद्ध शुरू होते ही कज़ाक रेजिमेंटों को सुरक्षित स्थानों पर भेज दिया गया। जब तक मौका नहीं आता उनको चुपचाप वहीं रखा जाएगा।”

‘और फिर?’ शतरंज समटते हुए लिस्तेनिस्की ने पूछा।

और फिर जब मोर्चे पर असंतोष फैलेगा—और ऐसा अवश्य होगा क्योंकि भगोड़ा की बढ़ती हुई सग्या इस बात का स्पष्ट सबूत दे रही है—तो कज़ाकों को बगावतें दबाने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। सरकार कज़ाकों को ऐसा रखती है जैसे हाथ में पत्थर। समय आने पर वह इस पत्थर से इक्बाल का सिर तोड़ने की कोशिश करेगी।’

तुम अपनी कल्पना के प्रवाह में नहीं बह रहे, दोस्त! तुम्हारी मायताएँ कुछ निराधार-सी लगती हैं। लिस्तेनिस्की ने आक्षेप किया, पहली बात तो यह है कि हान वाली घटनाओं के बारे में पहले से कुछ कहना मुश्किल है। यह कस मानूँ कि असन्तोष फैलने वाला है। लेकिन अगर यह मान लिया जाए कि मित्र शक्तियाँ जर्मनों को कुचल देंगी और युद्ध का शानदार अंत होगा, तो फिर आपके खयाल में कज़ाकों का क्या काम होगा?

बचुक रुवाई से मुसकराया, ‘यह तो ख़त्म हाता ही नज़र नहीं आता। शानदार अंत की तो बात ही और है।’

अभियान धीरे धीरे चल रहा है

यह तो और भी धीमा पड़ जाएगा।’ बचुक ने उस आश्वस्त किया।

तुम छुट्टी से कब लौटेंगे? वाल्मीकोव ने पूछा।

दो दिन हुए।”

बचुक ने अपने हाथ सिकोड़कर धुएँ का गाला बाहर निकाला और सिगरेट का टुकड़ा नीचे फेंक दिया।

“कहाँ रह छुट्टी में ?”

“पत्रोपदेश में।”

“खुब, तो राजधानी की क्या खबर है ? आह, काश मैं भी एक हफ्ता पत्रोपदेश में गुजार सकता।”

“तुम्हें वहाँ कोई मजा नहीं आएगा।” बचुब न कहा। वह ताल-तालकर शब्द मुह से निकाल रहा था। ‘खुराक की कमी है। मजदूर इलाका में भूख, असंतोष और खलबली मची हुई है।

‘इस युद्ध का मत भ्रष्ट नहीं होगा। आप सागा का क्या विचार है ?’ मकूलाव न प्रश्नमूचक दृष्टि से चारा ओर देखा।

“रूस जापान की सट्टाई ने १९०४ के इंकलाब को जन्म दिया था। यह लड़ाई खत्म होगी तो एक नया इन्कलाब आएगा। इंकलाब ही नहीं, युद्ध युद्ध होगा।”

लिस्त्वित्स्की न अनिश्चित सा इशारा किया, जैसे उसका टाकना चाहना हो। फिर उठकर मोहें बढ़ाए खाई में इधर उधर घूमने लगा। गुस्से की दवाते हुए वह बोला, ‘मैं हैरान हूँ कि हम अफसरों के अंदर भी इस तरह के सोच है। हमने बचुब की तरफ इशारा किया। “मैं हैरान इसलिए हूँ कि आज तक मैं यह नहीं समझ पाया कि इसका रबैया देश और युद्ध के प्रति क्या है। कम परमा ही यह गोल मोल-सी बात कर रहा था जिससे साफ़ लगता था कि वह हमारी हार देखना चाहता है। क्या मैं ठीक समझा हूँ तुम्हारी बात बचुब ?”

“मैं हार जाने के हक्क में हूँ।

‘लेकिन क्यों ? मैं समझता हूँ कि तुम्हारे राजनीतिक विचार चाहें कुछ भी हों, अपने देश की पराजय चाहना तो गढ़ारी है। यह किसी भी शरीफ़ आत्मी न लिए घम की बात है।”

‘याद है द्यूमा के मोगल-डेमोक्रेटिक मदस्यो ने सरकार के खिलाफ़ क्या सघप किया था। वह भी ता पराजय की ओर ल जाने वाली बात थी।” मकूलाव बीच में बोला।

‘क्या तुम उनसे सहमत हो, बचुब ? लिस्त्वित्स्की ने पूछा।

मैं जब कहता हूँ कि मैं हार के हक्क में हूँ, तो जाहिर है कि मैं

उनसे सहमत हूँ। इस की सोशल डेमोक्रेटिक सेक्टर पार्टी का सदस्य हाँते हुए दूसरा वे अपने साथी पार्टी सदस्य स भिन मेरे विचार हो भी नहीं सकते। मैं हैरान हूँ येवनी निकोलायेविच कि तुम इतने पट लिख कर भी राजनीतिक रूप से इतने भ्रमारी हो।

‘मैं तो सबसे पहले एक फौजी सिपाही हूँ और राजतंत्र का बकादार मुझे तो सोशलिस्ट कामरेड का दस्कर चिन्ह होती है।

तुम सत्रस पहले तो बुझू हो और फिर आत्म तृप्त फौजी जानवर बचुव न सोचा और मुसकान पवा ली।

फौज में आदमी की मजीज हालत होती है।’ मकूलान न पिसिमाइ हुई आवाज में कहा हम सब राजनीति से भ्रमण रह हैं। हम लाग तो एक तरह से गाँव के बाहर के रहने वाले हैं।’

कप्टन काल्मीकोव अपने झूलत हुए गलमुच्छा का ठफारता हुमा बठा रहा। उसकी भयानक मगालियाई आँख चमक रही थी। चूगोव विस्तर पर लटा दीवार से लग मकूलान के एक चित्र को निहार रहा था। वह एक अधनगी औरत का चित्र था जिसका चहुरा मगडलीन जसा था। उसके होठों पर एक मादक और कामुक मुसकान थी और वह अपनी नगी छातिया का देन रही थी। बाए हाथ की दो उगलिया स वह एक छाती का गीब रही थी। एक उगली बड़ी सावधानी से पीछे हटाई हुई थी। उसकी अधमुदी आँखा के नीचे एक साया था जो उसकी आँखों के स्निग्ध प्रकाश से नरम हो गया था। एक कच्चा उठा हुआ था जिसके साथ उसकी फिमलती हुई गमीज अटनी हुई थी और गरदन की हड्डिया के नीचे के गड्ढों में हल्की नरम रोगनी लहरा रही थी। उसकी मुँहा में ऐसी स्वाभाविक गान और वास्तविकता थी और वह मद्धिम रंग ऐसा धनपेक्षित सौंदर्य लिये हुए था कि चूगोव धनजाने ही मुसकरा दिया। वह चित्र की सुंदरता में ऐसा मुग्ध हुआ कि उसने मूना ही नहीं कि क्या यह सब बन रही है।

सूत्र ‘अपनी आँखें बहा से हटात हुए वह एकाएक जोन उठा।

यह गान बड़े गलत समय उसके मुँह से निकला क्योंकि बचुक ने अभी समय बहा था ‘आप यकीन कीजिए जारगाही का नाम होगा।

लिस्तनिस्की ने सिगरेट रात की और एन तीली मुसकान के साथ पहल बचुक की ओर दखा फिर बूबोव की ।

‘बचुक !’ वाल्मीकोव एकदम बोल उठा, ‘जरा ठहरो लिस्तनिस्की ! बचुक, सुनो ! अगर हम मान लें कि यह युद्ध गृह-युद्ध में बदल जाएगा, तो फिर ? तुम राजतन्त्र का पसंद दोगे ? लेकिन इस स्थान पर तुम कैसी सरकार बनाना चाहते हो ?’

‘मजदूरा की सरकार !’

‘तुम्हारा मतलब है ससद ?’

‘उससे भी ज्यादा । बचुक मुसकराया ।

‘वह क्या ?’

‘मजदूरा की तानाशाही !’

यह तो अब समझ गए । लेकिन बुद्धिजीवी किसान इन बातों का क्या काम रहेगा ?’

‘किसान हमारे साथ रहने । बुद्धिजीवियों का भी एक भाग हमारा साथ होगा । दूसरे हों, उनका तो बुरा हाल होगा ।’ जल्दी से उसने एक कागज अपने हाथ में मराड़ा और एक ओर फेंक दिया । फिर अपने दाँत भीचकर बोला, ‘यह होगा उनका ।’

‘बहुत ऊँच जा रहे हो लिस्तनिस्की ने धृष्टा भरे स्वर में कहा ।

‘हम टिकने भी ऊँच ही ।’ बचुक ने उत्तर दिया ।

‘नीचे कुछ घास बिछा ना । हा सज्जा है कि गिर पड़ो ।’

‘तुम आगिर मार्च पर किस लिए आध और अफसर बनने की किस लिए याचना की ? इन बातों का तुम्हारे विचारों से क्या मूल ? समझ में नहीं आता । एक आदमी है जो युद्ध के खिलाफ है, इस बात का विरोध है कि तयारी हो, क्या कहते हैं उसके गण-प्रमुखा की ? और वह अफसर है फौज में ।’ वाल्मीकोव ने अपने बूटों का घपघपाया और अब हसने लगा ।

‘अपनी मशौनगता से तुमने कितने जमान मजदूरों का खून किया है ?’ लिस्तनिस्की ने पूछा ।



बधु ने अपनी जेब से कागजा का बड़ा सा बडल निकाला और लिस्तनिट्स्की की ओर पीठ करके उनमें से कुछ डूबने लगा। फिर मेज के पास जाकर वहाँ एक अखबार बिछा दिया। पुराना होने के कारण इसका कागज पीला पड़ चुका था। उसने अपने मजबूत हाथों से इसकी सतहों निकाली।

“मैंने कितने जमाने मजदूरों का खून किया है? यह एक सवाल है। मैं अपने आप इनलिए आया, क्योंकि मुझे यहाँ आना ही पड़ता। मैं समझता हूँ कि यहाँ ख़दरों में मैंने जो कुछ सीखा है, यह बाद में काम आएगा। बाद में। यह सुनिये। और उसने सैनिक के ये शब्द पड़े—

प्राधुनिक सेना की मिसाल लीजिए। यह संगठन का एक अच्छा नमूना है। इस संगठन की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह लचीला है और इसमें यह योग्यता है कि एक साथ लाखों लोगों में एक ही इच्छा जागृत कर दे। आज ये लाखों लोग देश के अलग अलग भागों के अन्दर अपने घरों में पड़े हैं। कल को लाम लगी है तो वे सब के-सब निश्चित कदमों पर एकत्र हो जाएँगे। आज वे लाइया में पड़े हैं। महीनों पड़े रह सकते हैं। कल को उन्हें किसी दूसरी व्यवस्था में हमला करने भेज दिया जाएगा। एक दिन वे गोलियों और छरों से बचकर बमाल दिखाते हैं तो दूसरे दिन खुली लड़ाई में जादू दिखाते हैं। आज उनके अग्रिम दस्ते जमीन के नीचे सुरगें बिछाते हैं तो दूसरे दिन वही लोग घरों के ऊपर उड़ने वाला क मशबरे पर बीसियों मील आगे बढ़ जाते हैं। जब एक ही लक्ष्य के पीछे एक ही इच्छा में ओन प्रात तागा लोग अपना परस्पर व्यापार और काय बल देते हैं अपना स्थान और कायविधि बदल देते हैं तथा बदलते हुए हालात और सघर्षों की खरूरतों के अनुसार अपने भोजन और हथियार बल देते हैं तो उस संगठन कहते हैं।

यही बात बुजुर्गों वगैरे विरुद्ध मजदूरों वगैरे सघर्ष पर भी लागू होती है। आज इन्कलाबी हानात नहीं हैं।

लेकिन हालात से तुम्हारा क्या अभिप्राय है? शूरोव ने टोका। बचक ने उसकी ओर एस टवटकी बाँधकर दत्ता जैसे अभी नीचे

से उठा हो। फिर अपने माथे पर हाथ फेरते हुए सवाल को समझने की काशिश करने लगा।

‘मैंने पूछा था कि हालात’ स तुम्हारा क्या मतलब है?’

‘तुम्हारा सवाल मैं समझना हूँ। लेकिन मुझे समझाने में दिक्कत हो रही है।’ बचुक बच्चों की तरह मुमकराया। उसका घड़े में भावुक चेहरे पर यह मुस्काह बड़ी अजीब लग रही थी, जैसे काँ छोटा सा सफेद खरगोश हेमन्त की वर्षा से भीगे खेत में से निकल गया हो। “हालात एक स्थिति होती है परिस्थितियाँ का एक समूह। ठीक है?”

लिस्तेनिरस्की ने अनिश्चय से मिर हिलाया। ‘पढ़त चला।’

‘आज इक्नाबी हालात नहीं है। व हालात, जिनसे जनता में उभार आता है और सरगरमियाँ तेज हाती हैं, आज विद्यमान नहीं हैं। आज तुम्हें बैलट पपर दिया जाता है— इसे ले ला। सगठन करना सीखा, ताकि अपने दुश्मन के खिलाफ हमें हथियार बना सका, इसलिए नहीं कि उन लोगों के लिए आरामदह ससदीय म्यान लिए जा सकें जो जेल जान का भय से अपनी कुमियाँ चिपके रहते हैं। अगले दिन तुमसे वल्ट पेपर ले लिया जाता है और तुम्हारे हाथ में एक राइफल और नवीनतम इजीनियरिंग विधि के अनुसार तंजी से फायर करने वाली बंदूक दे दी जाती है। मौत और तबाही के इस हथियार को भी समाल लो। युद्ध से डरने वाला भावुक लोगों की बातों पर का मत धरा। टुनिया में बहुत-कुछ ऐसा है जिसका मजदूर वर्ग की मुक्ति प्राप्त करने के लिए आग और लाह से तबाह करना पड़ेगा। और अगर जनता में गुम्मा और अमन्तोप बढ़ जाए, अगर इक्नाबी हालात पैदा हो जाए, तो नये सगठन बनाने के लिए तयार रहा। मौत और तबाही का इन्हीं हथियारों का अपनी ही मरतार और अपने ही युजुषा वर्ग का विस्फोट इस्तेमाल करो”

दरवाजे पर दस्तक हुई और पाँचवीं म्वाट्रन का गार्जेंट मजदूर अन्दर आ गया। बचुक रुक गया।

जनाय,” वह कार्मीकाय से सम्वाधित हुआ, ‘गर्जित’

एक अदली आया है।”

काल्मीकोव और जूवोव ने अपने ओवरकोट पहने और बाहर निकल गए। मकूलोव बठकर चित्र बनाने लगा। लिस्तनित्स्की खार्ई में घूमता रहा। अपनी मूठो पर उगली फरते हुए वह सोच में डूबा हुआ था। यादों के बाद बचुक भी चला गया। वह साइया की फिमलन और कीचड़ में संचल रहा था। बाए हाथ से उसने कालर व कोन पकड़े हुए थे और दाएं हाथ से कोट का घामें हुए थे। हवा उस तम खार्ई में से बह रही थी दीवारों से टकराती और सीटियां चजाती हुई। उसके चेहरे पर एक अनिश्चित मुस्कान थी। वह अपनी सोह में पहुँचा तो फिर पूरी तरह भीग चुका था। उससे सठे हुए गाल्डर व पत्ता की गंध आ रही थी। मशीनगन दस्ते का कमाण्डर सो रहा था। उसके साँवले चेहरे से उन तीन रातों की घबराहट साफ दिखाई देती थी जो उसने तांग में बिता दी थी। बचुक ने अपना किट बग टटोला। यह बग तन से उसके पास था जब वह एक प्राइवेट था। दरवाजों के पास कागजात का ढेर लगाकर उसने उनमें आग लगा दी। अपनी जवा में दो डिब्बे मीट और बहुतनी रिवाल्वर की गालियाँ भरकर वह फिर बाहर निकल गया। खरा से खुल दरवाजे में से हवा में दर घुस आई जले हुए कागजों का सफेद राख चारा आर बिसर दी और लम्प को बुझा दिया।

बचुक व जान क यात्र लिस्तनित्स्का थोड़ी देर खामोशी से इधर उधर घूमता रहा। फिर मेज व पाग गया। मकूलोव अभी भी चित्र बना रहा था। उसकी पसिल की नाक के नीचे सफेद कागज पर बचुक का चेहरा उभर रहा था वही रुखा मुस्कान लिय।

‘बड़ा स्पष्ट चेहरा है। मकूलोव ने लिस्तनित्स्की की आर घूमकर कहा।

‘तो, तुम क्या सोचते हो? येनी ने पूछा।

‘गान ही जानता है। मकूलोव ने प्रश्न की महत्ता को आरते हुए उत्तर दिया। अजीब आदमी है। अब तो उसने अपना सबकुछ बताया दिया। पहले तो उसने अपना ही मुद्रित था। तुम जानते हो कि वह कश्शाका में बहुत लोकप्रिय है विशपकर मशीनगन चलाने

वालो मे । तुमने इस तरफ ध्यान दिया ?”

‘हैं,’ लिस्तेनित्स्की ने अस्पष्ट सा उत्तर दिया ।

“मशीनगन वाले सब के सब बोलबोल हैं । उसका चाकई उन पर असर हो रहा है । आज उसने अपना हाथ दिखाया तो मैं हक्का बक्का रह गया । उसने ऐसा क्या किया ? वह जानता है कि हमसे से कोई उससे साथ सहमत नहीं होगा । फिर भी उसने खुसकर अपने मन की बात कह दी और वह कोई तेज मिजाज भी नहीं है । बड़ा खतरनाक है ।

बच्चू के विचित्र व्यवहार के धारे में सोचते हुए मकूलोव ने चित्र का परे धकेल दिया और कपड़े उतारने लगा । उसने अपनी गीली जुराबें स्टोव के ऊपर लटका दी घड़ी का चाबी दी और सिगरेट सुलगाकर लट गया । उसे एकदम नींद आ गई । मकूलोव जिस स्टूल से उठा था, लिस्तेनित्स्की उस पर बैठ गया और बच्चू के चित्र के दूसरी ओर अपना हाथ से लिखा—

“महामहिम,

इससे पहले जहाँ सदेह मैं आपको लिखकर भेजे थे आज वह सच्चे साबित हो गए । हमारी रेजिमट के अफसरों (जिनमें मरे प्रतिरिक्त पाँचवीं स्क्वाडन के कप्तान बाल्मीकोव तथा सैप्टीनेंट बूबाव और तीसरी स्क्वाडन के जूनियर कप्तान मकूलाव शामिल थे) के बीच बात करते हुए कान्टेंट बच्चू ने स्पष्ट बताया कि वह अपने राजनीतिक विश्वास के अनुसार क्या काम कर रहा है । निस्संदेह वह यह सब पार्टियों की हिदायत पर हाँ कर रहा है । हालाँकि मैं यह नहीं समझ पाया कि उसने खुल्लम-खुल्ला अपने इरादों का प्रकट किए । उसके पास बहुत से कारणों से जो गैर कानूनी प्रतीत होते हैं । उसने ज़नेवा से प्रकाशित होने वाले एक गैर कानूनी अखबार ‘कम्प्युनिस्ट’ में से कुछ पढ़कर सुनाया । इसमें कोई शक नहीं कि कान्टेंट बच्चू हमारी रेजिमट में ख़फ़िया काम रहा है । समझना चाहिए कि वह स्वच्छता से हमारी रेजिमट में आया ही इस उद्देश्य के साथ । सबसे पहले उसने मशीनगन चलाने वाला पर असर डालना शुरू किया है । उनका हतोत्साह बढ़ा दिया गया है । उसके सतरनाक असर से रेजिमट के हीसल पम्प हो रहे हैं । जैसा कि मैं

विशेष विभाग को आगाह कर चुका है, बहुत सी अवता की वारदातें भी हा चुकी हैं।

वह अभी अभी पत्रोपार्ण में छुट्टी काटकर आया है और अपने साथ बहुत सा बागो साहित्य लाया है। अब वह अपना काम अधिक तजी से करेगा।

उपयुक्त व आधार पर मैं इन नजीजा पर पहुँचा हू कि १ कानेंट बचुन का अपराध पूरी तरह साबित हो गया है। (इस वार्तालाप में उपस्थित दूसरे अप्रमर शपथ लेकर इस बात का प्रमाणित कर देंगे।) २ उसकी इ कलाधी सरगरमियो को रोखने के लिए ज़रूरी है कि उस फौरन गिरफ्तार करके मोर्चों की फौजी अदालत के सामने लाया जाए। ३ मशीनगन दस्ता तुरन्त तोड़ दिया जाए। जो ज्यादा खतरनाक हैं उन्हें घनग कर दिया जाए और दूसरा को पीछे भेज दिया जाए या दूसरी रेजिमेंट में विनियर दिया जाए।

मैं आपका देग तथा राजतन्त्र की बफालारी से सेवा करन का आश्वासन दिलाता हू। इस पत्र की एक प्रति मैंने एस० टी० कोप को भेज दी है।

सैक्टर न० ७ अबतूबर २० १९१६ कप्टन येकनी लिस्तनिट्स्की

घगले दिन सवरे सवेर लिस्तनिट्स्की ने अपनी रिपोर्ट अदली के हाथ डिवीजनल स्टाफ भेज दी और नाश्ता करके खाइया की ओर चला गया। खाइ व फिसलन भर किनारा से दूर दलदल के ऊपर धुंध फली हुई थी। यह ऐसे तार तार हो रही थी जस कँटीले तारा के जाला में उलझ गई हो। खाइ के तल पर पतले कीधड़ की एक इच भोगी परत थी। दीवारा से भूरी भूरी नदियाँ बह रही थीं। गीले कीधड़ भरे बरानकोट पहन कदवाक किनारे की टीन पर चाय की बेलियाँ उबाल रह थे। राइफलें छाई की दीवार के साथ टिकाकर वे एडियों के बल बैठ गए और धुम्राँ उड़ाने लगे।

तुम लोगो को कितनी बार कहा गया है कि टीना पर आग न जलाया करो ? तुम्हारी समझ में नहीं आता मूअर वहाँ के ? कदवाकों की पहली ही टोली व पास आकर लिस्तनिट्स्की चिल्लाया।

उनमें से दो ता अगमन से वहाँ से उठ गए। बाकी बड़े धुमाँ उड़ाते रह। उड़ाने अपने बरानकोटा के सिर अपने नीचे खींच रखे थे। एक साबला ददियल बरजाक, जिसके कान में चाँदी के कुण्डल लटक रहे थे, कनली के नीचे सूखी घास भाकत हुए बोला, "हम ता खुशी से टीनों के बिना गुजर करने को तयार हैं। लेकिन, जनाव, भाग कस जलेगी?" कीबड़ ता देखिये।

"वह तीन पीगन निकालो।"

"क्या, हम लोग यहाँ भूखे बैठेंगे? आप यह चाहते हैं क्या?" बचक के दागो घाने एक बरजाक न पूछा। वह गुस्सा में था लेकिन उसने मौख उठाकर भक्रसर का चेहरा नहीं देखा।

मैं कहता हूँ कि वह तीन निकालो।' बट की ठोकर से देवनी ने फतला के नीचे मुलंग रही घास को दूर फेंक दिया।

आध और आधघण्टे से मुस्कराते हुए ददियल बरजाक ने देवनी का पानी गिरा दिया और बड़बड़ाया, 'बाम पी ली सटका।"

कण्टन भागे गया ता बरजाक सामाशी से उसको नज़रें जमाए देखते रह। ददियल बरजाक की भाँगा में टाट टाट घासे लहक रहे थे।

'दम्भी हुरामजादा!'

एक और बरजाक ने लम्बी आह भरी और अपनी राइफ़ल बंध से सटका ली।

पहले टूफ के क्षण में लिस्तनित्स्की के पीछे मर्कूज़ोव पहुँच गया। उनकी साँस फूली हुई थी और बमड़े की नई जक़िन चरमरा रही थी। मुह से दसी तम्बाकू की गंध आ रही थी। देवनी की एक झार ल जाकर उसने जल्दी से कहा, 'सुना है कुछ? बचक कस रात का भाग गया।'

'बचक? क्या था?'

"भाग गया समझे? मगोनगन दस्त के कमाण्डर ने, जा उमी साई में रहता है मुझे बताया कि कल रात हमस मिलन के बाद वह लौटा नहीं। इसका मतलब है कि वह हमारी साई में निकलते ही भाग गया होगा। कमी रही?"

लिस्तनिस्की अपने चश्मे के शीशे को साफ करता और तयोरिया बदलता खड़ा रहा।

‘तुम तो घबरा गए लगत हो।’ मकूलोव उसके चेहरे पर कुछ टूटने लगा।

‘मैं ? पागल हो गए हो ? मैं क्या घबराऊंगा ? मैं तो अचानक यह खबर सुनकर हैरान हो गया था।’

२

अगले दिन सबेरे ही सार्जेंट मजर लिस्तनिस्की की गार्ड में आया। उसके चेहरे पर हवाइया उड़ रही थी। इधर उधर की बातें करन के बाद उसने बतलाया ‘जनाब आज सबेरे कब्जाको की अपनी खाइया में ये पर्वें मिल। जरा अजीब-सा मामला है। मैंने सोचा आपको इतला कर दूँ।’

‘कस पर्वें ? अपनी जगह से उठन हुए लिस्तनिस्की ने पूछा।

सार्जेंट ने कुछ मरोडे हुए टाइप किए पर्वें उसके हाथ में थमा दिए। लिस्तनिस्की ने पढ़ा—

दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ।

साथी फौजियो,

यह कम्बल सवाई दो साल से चल रही है। दो साल से तुम लोग खाइयों में सड़ रहे हो। दूमरो के हितों की रक्षा के लिए। दो साल से सभी देशों के मजदूरों और किसानों का खून बह रहा है। लाखों लोग हतान्त हुए। लाखों औरतें विधवा और बच्चे यतीम हो गए। यह नतीजा है इस खूनखराबे का। तुम लोग किस लिए लड़ रहे हो ? किसके हितों की रक्षा कर रहे हो ? जारशाही सरकार ने लाखों फौजियो को लड़ाई की आग में भ्राज दिया है, ताकि नये इलाकों पर कब्जा कर सकें और वहाँ की जनता का वैसे ही दमन करें जैसा इन समय गुलाम पोलंड और अन्य राष्ट्रा के साथ हो रहा है। दुनिया के उद्योगपति अपने कल-कारखानों की उपज बचन के लिए मजिन्गो में सामेदारी नहीं कर सकते, न ही

मुनाफे में सामंदायी कर सकते हैं। इसकी वजह से मनीष गविन से मण्डियों का बंटवारा कर रहा है। और तुम अपनी नासमझी में उनके हिता की कगमकश में खुद भीत के मूढ़ में जा रहे हो और अपने जैसे दूसरे महानतकता का खून बहाते हो।

अब तुम अपने भाइयों का काफी खून बहा चुके। मजदूरों उठा, जागा। तुम्हारे दुश्मन आस्ट्रियन या जर्मन फौजी नहीं। वे भी वस ही घासे का गिकार हैं जैसे तुम। तुम्हारे दुश्मन हैं तुम्हारा अपना जार, उद्योगपति और जमींदार। अपनी बटूका का मुह उनकी तरफ कर दो। जर्मन और आस्ट्रियन फौजियों में भाईचारा बनाओ। तुम्हारे इंद गिद तारों के जाल हैं जिन कि तुम जानवर हो। इन तारों के पार हाथ बढ़ाकर एक दूसरे से हाथ मिलाओ। तुम महानतकता भाई हो। तुम्हारे हाथों पर अब भी मगकश के छूनी छाले हैं। क्या है तुम्हारे पास जो तुम बांट सकते हो? स्वच्छाचार मुर्दाबाद। साम्राज्यवादी जग मुर्दाबाद। दुनिया भर के मजदूरों की एकता जिंदाबाद।

पर्चा पड़ते पड़ते निम्ननिस्की का पारा चढ़ता गया। 'गुरु हो गया।' उसने सोचा। एक अचहीन घृणा ने उसके सोच का जकड़ लिया और उसके मन के भाव उमड़ने लग। इस बात की सूचना उसने तुरंत टेलीफोन द्वारा रेजिमेंटल कमाण्डर को कर दी।

'इस बारे में थापका क्या हुकम है, महामहिम?' उसने पूछा।

"सापजेंट मजर और ट्रूप अफसरों को लेकर एबदम तलाशी लो। सबकी तलाशी लो। अफसरों की भी। आज मैं डिवीजनल स्टाफ से पूछूंगा कि व रेजिमेंट का कब पोछे हटा रहे हैं। जल्दी करवाऊंगा। तलाशी में कुछ मिले तो फौरन इतला दो।"

भरे खयाल में वह भीनीनगन वाला का काम है।

"अच्छा। मैं अभी कमाण्डर का हुकम दूंगा कि करवावा की तलाशी ले।

अफसरों की अपनी थाइ में बुलाकर निस्नित्की ने रेजिमेंटल कमाण्डर का हुकम सुनाया।



‘कितनी मही बात है।’ मकूलोव ने गुस्से से कहा, ‘क्या हम लोग एक-दूसरे की तलाशी लेंगे?’

“सबसे पहले तुम्हारी बारी लिस्तिनिस्की। एक नौजवान लपटीनेट बाता।

‘नहीं इसके लिए साट्री पड़ेगी।’

बणमाला के अनुसार।

मज्जाक की बात असंगत है। लिस्तिनिस्की ने बीच में टोककर कहा, ‘लेकिन इसमें शक नहीं कि बूढ़े की यह हिमाकत हृदय से गुजर गई है। हमारी रेजिमेंट के अफसर सीखर की पत्नी की तरह पवित्र है। सिर्फ एक कान्टे बचुक था, लेकिन वह फौज छोड़कर भाग गया। फिर भी हम कश्शाका की तलाशी जरूर लेनी चाहिए। कोई जाकर सार्जेंट मेजर को बुला लाया।’

सार्जेंट मेजर एक मधेड कश्शाक था। वह सीने पर सेंट जॉन के तीन तगमे सटकाए अदर दाखिल हुआ। उसने दासकर अफसरों के चेहरों की ओर देखा।

कम्पनी में म दहजनक चरित्र क मिपाही कौन हैं? तुम्हारी राय में ये पर्चे किसने लाकर फेंक हैं? यवोनी न जवाब तलब किया।

‘हमारी कम्पनी में तो ऐसा कोई भी नहीं है टूजूर।’ उसने विश्वास-पूर्वक उत्तर दिया।

“नकिन ये पर्चे ला मिले है हमारे मकटर में ही। क्या किसी दूसरी कम्पनी के सनिक हमारी खदना में आय थे?”

“नहीं जनाव।”

‘मच्छा तो हम जाकर हर जवान की तलाशी लेंगे मकूलोव ने हाथ से संकेत किया और मुड़कर दरवाजे की ओर बढ़ा।

तलाशी शुरू हुई। कश्शाका के चेहरों पर हर किस्म के भाव थे। कुछ आश्चर्य से चकित थे कुछ डर और घबराहट से अफसरों के मुंह की ओर ताक रहे थे और कुछ एम भी थे जो अफसरों को अपने तुच्छ बोरिया बिस्तर उलटत पलटत देखकर हमी से लोटपोट हो रहे थे।

‘आप क्या तलाश कर रहे हैं? क्या कोई चीज चोरी हो गई है?’

सायद हमरा कही देती हो ।" एव तज जुस्त सार्जेंट ने कहा ।

तलाशी वा कोर नलीजा नही निकला । सिफ एव ही बज्जाव के ओवरकोट की जेब म पचे की एक मलाई, मुडी-तुडी प्रति मिली ।

"तुमने इसको पढा है ?" मकूलोत्र ने पूछा ।

'मैंने इस सिगरेट बनाने के लिए उठाया था ' बज्जाव अपनी निगाह उठाए बगर ही मुसकराया ।

'तुम मुसकरा किस वान पर रहे हो ?" निम्ननिस्की क्रोध से चिल्लाया और तमनमाता हुमा उसकी ओर बढ़ा । बिना डडी वाले चदम के नीचे उसकी भीता की सुनहरी बरोनियाँ भपक रही थी ।

बज्जाव का चेहरा गम्भीर हो गया और उसके हाठा की मुसकान जले घाँधी में उडकर मायब हो गई ।

"माफ कीजिएगा, सरकार । लेकिन मैं तो पढ़ना नहीं जानता । मैंने यह पर्चा इसलिए उठाया था कि मेरे पास सिगरेट बनाने का कागज नहीं है । यह पर्चा जमीन पर पड़ा था, इसलिए मैंने उठा लिया । बज्जाव ने ऊँचे, घाहत और एक प्रकार से क्रुद्ध स्वर में कहा ।

लिलानिस्की ने जमीन पर घुका और वहाँ से लौट पड़ा । दूसरे भपमर उसके पीछे पीछे चल लिए ।

दूसरे दिन रेजिमेंट का वहाँ से हटा लिया गया और उस भगले मोर्चे से करीब दस बम्ट पीछे ननात किया गया । मदीनगा टुकड़ी के दो जवानों का गिरफ्तार करके उनका काट मांगल किया गया कुछ क नदीन करके गिद्ध रेजिमेंटों में भेज दिया गया, और कुछ का द्वितीय बज्जाव डिबीजा की भय रेजिमेंटों में । कुछ दिना के धाराम से रेजिमेंट कि ठीक संगठित गमन में था गई । बज्जावका न शरीर मल मनकर स्नान किया, यहाँ तक कि अपनी हजामत भी बनवाई । यह उहाँने दानी माफ करन का यह तरीका इस्तमान नहीं किया जा पादता में करत थ, यानी दाडी में भ्राम लगा लेत थ और जैसे ही गाल को घाँव लगती, गीन तोलिय थ मुह और जन जाना को पाछ लेत जब स एव फोजी हजामत ने एव जवान से कहा था, क्या तुम्हें ए नूपर की तरह भुनसू या और तरह हजामत बनाऊँ ?" तब स इ

त्तरीके का नाम सूअर को भुनसाना पड़ गया ।

रतिमण्ड ने आराम किया और कञ्जाक ऊपर से काफी छुन और अच्छी व्यवस्था में नज़र आत था । लकिन निम्ननिस्की और दूसर अफमरा को नातूम था कि नरम्बर क खुगवार नि का तरह उनका यह मूड भी नियावटी हो था । मार्च पर वापस जान की जसे ही रेजिमे ट में अफवाह फलती उनका यह भाव बदल जाता और उनमें असन्तोष बकान और एक उन्मासीनता भरा आशान उभरकर ऊपर आ जाता । एक मर्मांतक श्वांति और बचान जाहिर हान लगती जा उनमें नतिक असन्तुलन और विरासन भर देती । निस्तिनिस्की जानता था कि एस मूड में भरा मनुष्य जब किसी उद्देश्य का सामने रखकर सपप करता है तब वह कितना खतरनाक हो जाता है ।

सन् १९१५ में उसने एक कम्पनी के जवानों को देखा था जिन्हें पाच बार आक्रमण के लिए भेजा गया था । हर बार उन्हें भयकर नुकसान उठाना पड़ता था फिर भी उन्हें बार-बार आक्रमण करने का आदेश दिया जाता था । कम्पनी के बचे-बुचे जवान आखिरकार आदेशों की परवाह न कर मार्च से लौट पड़े और सना की पिठनी पकियों की तरफ भाग करत हुए चल गये । निस्तिनिस्की के दम्त को उन्हें रोकने का हुक्म दिया गया और जब उसने निपाहिया न एक पकिय में फतकर उनको रोकने की कोशिश की तो उन जवानों ने फायर करना शुरू कर दिया । उनकी तादाद साठ में ज्यादा नहीं थी । लकिन निस्तिनिस्की ने देखा था कि इन साठ जवानों ने कितनी बहादुरी से जान पर ऐलनर अपनी आत्मरक्षा करने की कोशिश की थी और कञ्जाक भी तलबारा से अपने गीन बटवाते हुए मौत का गाद में बंदत आय था । उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि उनकी मौत किसके हाथों हो रहा थी ।

इस घटना की याद ने उसे विचलित कर लिया और निस्तिनिस्की ने एक बार फिर कञ्जाक के चेहरा का उत्सुकतापूर्वक अध्ययन किया । वह आश्चर्य करने लगा कि कहीं ये लोग भी एक दिन पलटकर पीछे न हटने लगे और मृत्यु के अन्तावा और कोई ताकत उन्हें युद्ध क्षेत्र छोड़कर जाने से न रोक सक । और जब वह उनकी बनी, धुंध निगाहों का

अध्ययन कर रहा था, तब उसे महसूस हुआ कि वे भी ऐसा ही करेंगे।

युद्ध के आरम्भिक दिनों की अपेक्षा कज़ाको में काफी परिवर्तन आ गया था। उनके गीत भी अब नये थे और उनमें एक गम्भीर अनुत्साह व्यक्त होता था। वह जब उस फक्टरी के विशाल शेड के पास से गुजरता, जहाँ उसका फीजी दस्ता ठहरा था, उसे अक्सर एक हसरत और दर्द से भरे गीत की तान सुनाई देती। लिस्तेनिस्की ठहरकर सुनने लगता और गीत में व्यक्त सरल वेदना उसकी आत्मा को झकझोर देती। हृदय की चढ़ती हुई गति के साथ उसमें अंदर एक तार जैसे कसता जाता और गायन के मद्धिम स्वर की लहरियाँ जैसे उस तार को ज़ोर से छेड़कर उसमें एक पीड़ाजनक झंकार पड़ा कर देती। लिस्तेनिस्की कुछ दूर खड़ा होकर विज्रों की उदास घाम के घुघलने में निनिमेष ताकता रहता और उसकी आँखें आँसुओं से तर हो जाती।

रेजिमेंट के आराम के दिनों सारे दिनों में लिस्तेनिस्की ने सिर्फ एक बार ही कज़ाको के एक पुराने बीयरस के गीत के शब्द सुने थे। वह गाम की सर से वापस आ रहा था और जब वह शेड के पास पहुँचा तो उसे बहकड़ा और गराव के लेशों में भूर धावाज़ का गोर सुनाई दिया। वह भीषण गया कि क्वाटर मास्टर सार्जेंट, जा रमद लेने के लिए पड़ास के नगर में गया था, शामद घपन साथ चार-बाज़ार में त्रिन्ने वाली गराव की यातलें ताया होगा और उसमें कज़ाको का मनोरंजन कर रहा होगा, और अब वह सब लेशों में किसी बात पर हँस और झगड़ रहे होंगे। कुछ दूर से ही उसे उनकी विशिष्ट मीटिंग की बात-चरण की चीरन वाली धावाज़ और गीत की शक्तिशाली तान सुनाई पड़ने लगी थी। एक लम्बी, बाँगी हुई सीटी चक्करदार धाराहरण करती हुई ऊपर की उठा थी और फिर करीब तीस बज्जा के गजन में जस घुटनर मर गई थी। निश्चय ही काइ नौजवान कज़ाक लड़की के फग पर नाच रहा था और रह रहकर कान के पर्दे फाटने वाली तबली मीटो बजा रहा था। उसने थिरकते हुए कन्मा की धावाज़ गीत की मामूहिक लय में हँस गई थी।

लिस्तेनिस्की अनजान ही मुमकरा दिया और उसमें लय के माय

कदम मिलाकर चलने की कोशिश की। मेरा तो खयाल नहीं कि घुड़सवार कज्जाका की तरह पैदल सेना के जवान भी उतनी ही तीव्रता से घर लौटने के आकांक्षी हैं।' उसने सोचा। लेकिन तक धीर विवक न प्रतिवाद किया कि पैदल सेना का जवान किसी भिन धातु का बना नहीं होता। फिर भी इसमें ग़फ़ नहीं था कि मजदूरी से ख़दका में बठना कज्जाको को बहुत बुरा लग रहा था क्योंकि उनकी घुड़सवार सेना की नौकरी ही ऐसी है कि वे हर समय चलते रहने के आदी हो जाते हैं। इधर दा बरस से उन्हें ख़दका की सटाइ में भाग लेना पड़ा था या आगे बढ़ने की बेकार कोशिश में समय बिताना पड़ा था। फौज की हालत पहले कभी इतनी कमजोर नहीं थी। उसे फिर जगान के लिए ग़किनशाली नेतृत्व कुछ जोरदार सफलताएँ और एक बार हुकार भर कर आगे बढ़ाने की छ्तरत थी। बेशक इतिहास में ऐसे भी समय आए हैं, लम्बे और ठहर युद्ध के काल जब सबसे विष्वस्त और अनुशासित सैनिकों का उत्साह भी ठंडा पड़ जाता है। सुबोराब तक को ऐसा अनुभव हुआ था लेकिन कज्जाक डटे रहेंगे और अगर उनकी हिम्मत टूटेगी भी तो ग़ायब सबसे बाद में। वे अपने-आपमें एक छोटी सी कीम हैं अपनी परम्परा से लड़ाकू कीम हैं फ़क्टरी के मजदूरों और गाँव के किसानों जस चपरकनाती नहीं हैं।

धीरे तभी मानो उसे इस घोष में पढ़ने में बख़ान के लिए एक थकी आवाज़ ने एक नया गीत शुरू किया। दूसरे कज्जाको ने भी उसमें स्वर मिलाया और लिस्ननित्सकी को एक बार फिर कज्जाका की हसरतें एक गीत में पिराई सुनाई दी—

नौजवान अफ़सर इश्वर से प्रार्थना करता है।

नौजवान कज्जाक घर लौटने की मांग करता है।

आह	नौजवान	अफ़सर,
जान दो	मुझे	अपने घर
जाने दो	मुझे	अपने घर
अपनी	माँ और	बाप के पाग

अपनी माँ और बाप के पास,  
और अपनी नौजवान पत्नी के पास ।

अपनी रेजिमेंट छोड़कर भागने के चौथे दिन की शाम को बचुक मुठ क्षेत्र में स्थित एक बड़े व्यापारी नगर में पहुँचा । खिड़कियों से रोगनियाँ चमक रही थी । पाले ने सड़क के गड्ढों के पानी पर बर्फ की एक पतली परत जमा दी थी और इक्के दुक्के राहुगीरो के कदमों की कच-कच धूर से ही मुनाई देती थी । रोगन सड़क में बचकर बचुक पीछे की भेंचरी गलियों में से बड़ी चौकसी से चल रहा था । गहर में घुसने पर वह गश्त करने वाली एक फौजी दुकड़ी के सामने पड़ने पड़ने बचा था और अब वह भेड़िय की तरह सतक होकर भागे बढ़ रहा था, धरा के बाड़ों के सहारे फिसलता हुआ । उसने अपना दाहिना हाथ आवरकोट की जेब में छिपा रखा था, जो एक दिन तक सड़े भूस के ढेर में छिप रहने के कारण बेहद गंदा हो गया था ।

शहर में एक फौजी दस्ता तैनात था । इस दस्ते की कई दुकड़ियाँ थी और यह जानत हुए कि कहीं किसी समय भी गश्त करने वाले सैनिकों का सामना हो सकता है, बचुक ने अपने आवरकोट की जेब में रख रखा कि मूठ पर से अपनी पकड़ एक क्षण के लिए भी ढीली नहीं की ।

शहर के पार निकलकर बचुक कुछ देर तक एक सुनसान गली में खड़ा जाटता रहा । वह दरवाजों को गौर से देख रहा था और हर मामूली गरीब घर की छपरेखा का अध्ययन कर रहा था । करीब बीस मिनट बाद वह कोने के एक गंदे मकान की तरफ बढ़ा । खिड़कियाँ की एक दरार में से उसने झाँककर देखा और मन ही मन मुसकराता हुआ विस्वासपूर्वक फाटक के नीचे दाखिल हुआ । दरवाजा खटखटाने पर एक बूढ़ी स्त्री बाहर निकली, जिसने घाल ओढ़ रखा था ।

“क्या बोस्म इवानाविच यहाँ रहने हैं ?”

‘हाँ भीतर आइये ।’

बचुक जब उसके पास से गुजरकर बरामदे में दाखिल हुआ तो पीछे से फाटक का खटका बंद करने की आवाज सुनाई दी । नीचे

छनवाले एक कमरे में जहाँ तेल का लम्प जल रहा था, फौजी वर्दी में एक बुजुर्ग आदमी मेज़ के सामने बैठा था। वह उठकर खड़ा हो गया और मद राशनी में ताकत हुए उसने वज्र की तरफ अपनी बांह फला दी और अपनी खुशी दबाकर कहा 'तुम कहाँ से आ रहे हो ?'

मोर्चे से।

'फिर ?'

वज्र पहले तो हिचकिचाया फिर उसने मुसकराते हुए बुजुर्ग की फौजी पट्टी उँगली के छोर से धीरे-धीरे स्वर में कहा 'आपके पास कोई कमरा होगा ?'

हाँ हाँगा। इधर आकर आओ।'

वह उसको एक इसमें भी छोटे कमरे में ले गया। अंधेरे में उस एक कुर्सी देकर और कमरे का दरवाज़ा बन्द करके उसने बिड़ली का पर्ण लीज दिया और पूछा 'क्या तुम भाग आये हो ?'

'हाँ।'

वहाँ मोर्चे पर क्या हालत है ?'

'सब तैयार हैं।'

भरोसे के लाग हैं ?'

पूर।

बेहतर हो कि तुम अपने कपड़े उतार ला। तब हम बात करेंगे। ताम्रो अपना ओवरकोट दो। तुम्हें हाथ मुह धोने के लिए मैं अभी चिलमची ला देता हूँ।

जिस समय वज्र एक हरे रंग की ताबे की चिलमची में अपना मुह धो रहा था वह वीरगायी बुजुर्ग अपने महीन कटे वाला भू उगनिया केरता हुआ धीमे और धके स्वर में कह रहा था—

'इस समय के लोग हमसे कहीं ज्यादा ताकतवर हैं। हम अपनी ताकत अपना प्रभाव बढ़ाने की ज़रूरत है और लगातार युद्ध के सही कारणों लागा को समझते जाना है। हमारी ताकत और हमारी संख्या बढ़ रही है इसका तुम्हें विश्वास होना चाहिए। जो उन्हें छोड़कर भागते हैं वे अनिवायत हमारे पास आ जाते हैं। इसमें शक नहीं कि

प्रोड आग्नी एक लडके से क्यादा ताकतवर हाता है लेकिन जब वह बड़ा और शिथिल हो जाता है तो लडका उसका चुटकी बजाते पगस्त कर सकता है। और इस समय हमारा सामना बूढ़ी दुनिया के शक्तिशाली नहीं, बल्कि उसका लकवा प्रस्त अशा की अशक्तता से है।

बचुब न मुह बाकर तौलिय से पात्रते हुए कहा "रेजिमेंट छाडकर मान से पहले मैं उन सभी अप्सरा का बता दिया कि मैं क्या-क्या सोचना है। यह काफी दिलचस्प बात थी, आप जानते हैं खरब मशीन-गन चालका पर अपना नज़र तो गिरायेगे ही, दा एक जवाना का कोट-माफ़न करके सजा दोगे, लेकिन उनका पास कोई सख्त नहीं है इसलिए यह कहना संभव है? भरा खयाल है कि वह इन जवाना को विभिन्न दुकडिया में तबदील करके एक दूसरे में धलक कर देंगे और इस तरह हमारा काम आसान कर देंगे। हमारे लिए वह खुद ही विद्रोह के बीज बिनेर देंगे। उनमें से कुछ बड़े गानदार नीजवान हैं चकमक पतंग की तरह सस्त।"

"मुझे स्तोषान का लन मिला है। उसे एक ऐसे घादमी की उरुरत है जिसे फौजी मामला की जानकारी हो। तुम जाग्रत, लेकिन तुम्हारे पाण्डित्य का क्या होगा? तुम इतना बुरा क्यों करते?"

"काम क्या करना होगा? बचुब न पजा के बल खड़े होकर एक कील पर तौलिया लटवाने हुए पूछा।

"जवाना का सनिव निष्ठा देना," मजबान न मुसकराते हुए कहा। "क्या तुम अभी लम्बे नहीं हो?"

"बाई उरुरत नही" बचुब न उत्तर दिया। "छात और पर भरे जस काम में, मुझे तो मटर की फली जितना होना चाहिए, ताकि किसी का नज़र न पड़े।"

वे भी फटते तक बाने बरत रहे। एक दिन बाग, गय बपड़ा और मक अप से अपना हलिया एकदम बलकर तथा धारणास्की रेजिमेंट के सनिव न० ४४१ निवानाई डलवाताय के पाण्डित्य लकर, जा छाती में गोली से घायल हो जाने के कारण मार्च पर मोटने के बाबिन नहीं रहा था, बचुब गहर से निबलकर स्टेशन की ओर चल पड़ा।



ब्लात्नीमीर-बाल्हेस्की स लेकर वोल्हिनिया म बावल तक विशेष सेना का बजा था। दरअसल विशेष सेना तरह नम्बर की सना थी, लेकिन चूँकि ऊँच आदमी के जनरल भी अश्वविश्वासा के शिकार थे इसलिए सेना को विशेष सना कहा जाता था। सितम्बर १९१९ क आखिरी दिनो म इस प्रदेश म बढ़ने की योजना बनाई गई थी और तोपखाने की मदद से आगे बढ़ने का रास्ता तयार किया गया था।

इस क्षेत्र म तोपखान का बड़ा भारी जमाव किया गया था। नौ दिन तक जमन टैंका की दो बतारा पर भलग भलग धजन क हजारा गोले बरसाय गए। बमबारी के पहले दिन ही जब गोलाबारी तब हुइ तो जमन पहली खदक छोडकर पीछे हट गये। वहाँ बवल प्रेक्षक ही रहने दिए। कुछ दिन बाद उहाँ दूसरी खदक भी छाड दी और पीछे की तीसरी खदक म चल गये।

दसवें दिन तुर्किस्तान क राइफल दस्ते की टुकडिया न आग बडना गुरू किया। उहाँन फासीसी फौज की तरह सहर दर-लहर हमले का तरीका अपनाया। रूसी खदका म स सिपाहिया की सोलह लहरें उछल उछलकर बाहर निकला। भवर की तरह चक्कर काटती हुई और टूटे हुए कंगीले तारो के भयानक ढेरा क गिब उबलती उफनती मानव तूफान की स लहरे पवार की तरह आग बंती गई और जमनो की आर स आल्डर क वृक्षा क भुलस ठूठा और टीलों क पीछे से आग उगलती हुई बटूका स गोलिया की बीछार आती रही। इस गोर के बीच कभी कभी ताप का गजन फूट पडता और हर चीज उसकी बडक की ठोस लहर म हूब जाती और उसके साथ जमन मनीनगना की क्रुद्ध चटर चटर मुनाइ दती।

एक मील चौड क्षेत्र म क्षत विक्षत रतीली जमीन की डाती पर काले गाला क जस अ घड चल रहे थे और हमला करती सनिका का लहरें कभी टूट जाती, धूल म अट जाती और गाला से हुए गन्डा म स उछल उछलकर बाहर निकलती और फिर पेट क बल सरककर आगे बढ़तीं।

गाला की बीछार तब हाती गई, फटन पर उनम स छूटने वाली